17 नवम्बर 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 33, अंक : 16 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर (द्वितीय), 2010 सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर -

आध्यात्मिक व्याख्यानमाला संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर दिनाँक 3 से 7 नवम्बर तक श्री पंचकल्याणक पूजन विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र.हेमचंदजी हेम भोपाल, ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड, पण्डित दिनेशभाई शहा एवं डॉ. उज्ज्वलाबेन शहा मुम्बई के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रातः स्व. शांताबेन एवं श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई की बहन स्व.लाभूबेन जगजीवनदास जैन परिवार दिल्ली द्वारा आयोजित पंचकल्याणक मण्डल विधान के उपरांत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

पत्रिका विमोचन एवं स्वाध्याय मण्डप का उद्घाटन संपन्न

मङ्गलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 16 से 23 दिसम्बर, 2010 तक होनेवाले श्री आदिनाथ दि.जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा व गजरथ महोत्सव की मुख्य पत्रिका का विमोचन समारोह दिनांक 3 नवम्बर को रखा गया।

आयोजन में श्री पवन जैन द्वारा पत्रिका का वाचन किया गया, तदुपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों से उद्घाटन विधि सम्पन्न हुई। सभा की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। इस प्रसंग पर पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सी. एस. जैन देहरादून, श्रीमती बीना जैन व श्री राजेन्द्र जैन देहरादून एवं श्री पी. के. जैन रुडकी मंचासीन थे।

इसी प्रसंग पर **मङ्गलायतन** परिसर में नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन का भव्य उद्घाटन श्रीमती भारतीबेन परिवार मुम्बई एवं श्री पंकजभाई झबेरी परिवार मुम्बई के करकमलों से हुआ। ज्ञातव्य है कि इस स्वाध्याय भवन में आचार्य कुन्दकुन्द शोध संस्थान की भी स्थापना की जा रही है।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

मुक्त विद्यापीठ की परीक्षा पद्धति में इस वर्ष से निम्नानुसार बदलाव किया गया है, अतः कृपया ध्यान देवें और उसी के अनुसार तैयारी करें।

मुक्त विद्यापीठ द्वारा जून माह में फस्ट सेमेस्टर एवं दिसम्बर माह में सैकण्ड सेमेस्टर की परीक्षा ली जावेगी; ताकि परीक्षार्थी एक ही वर्ष में एक कक्षा को उत्तीर्ण कर सके।

इसके अनुसार दिसम्बर, 2010 में निम्नानुसार परीक्षायें आयोजित होगी।

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा

प्रथमवर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-दो
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-तीन

द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-दो
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : धर्म के दशलक्षण (70 अंक) + भक्तामर स्तोत्र (30 अंक)

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : रत्नकरण्डश्रावकाचार (केवल श्लोकार्थ) 150 श्लोक
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : रामकहानी (70 अंक) + आप कुछ भी कहो (30 अंक)।

द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : मोक्षमार्गप्रकाशक - एक से चार अधिकार तक
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : नयचक्र - निश्चय व्यवहार प्रकरण तक
3. तृतीय प्रश्नपत्र : हरिवंशकथा (70 अंक) + भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ (30 अंक)।

जिन परीक्षार्थियों ने अपनी परीक्षा फीस अभी तक न भेजी हो तो कृपया शीघ्र भिजवायें।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में
16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक होनेवाले
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
में अवश्य पधारें।

सम्पादकीय – 46

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – ७०

विगत गाथा में कहा है कि अज्ञानी जीव अपने ज्ञानावरणादिक कर्मों के उदय से कर्त्ता–भोक्ता होता हुआ मोहाच्छादित होकर अनन्त संसार में परिभ्रमण करता है।

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि जीव गुणस्थान परिपाटी के क्रम से मोक्षमार्ग को प्राप्त कर मोह का उपशम तथा क्षय करके अनंत आत्मीक सुख का भोक्ता होता है। मूलगाथा इसप्रकार है –

उवसंतखीणमोहो मग्गं जिणभासिदेण समुवगदो।
णाणाणुमग्गचारी णिव्वाणपुरं वजदि धीरो।।70।।

(हरिगीत)

जिन वचन से पथ प्राप्त कर उपशान्त मोही जो बने।
शिवमार्ग का अनुसरण कर वे धीर शिवपुर को लहें।।70।।

जिस पुरुष ने जिन वचनों द्वारा मोक्षमार्ग को प्राप्त करके तथा दर्शनमोह के उपशम, क्षय अथवा क्षयोपशम को प्राप्त करके सम्यग्ज्ञान प्रगट किया है, वह पुरुष शीघ्र निर्वाण को प्राप्त करता है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि यह कर्मवियुक्तपने की मुख्यता से प्रभुत्वगुण का व्याख्यान है। जब यही आत्मा जिनाज्ञा द्वारा मोक्षमार्ग को प्राप्त करके उपशान्तमोहपने एवं क्षीणमोहपने के कारण विपरीताभिनिवेश नष्ट हो जाने पर सम्यग्ज्ञान प्रगट करता है तथा कर्तृत्व और भोक्तृत्व के अधिकार को समाप्त करके सम्यक्रूप से प्रभुत्व शक्तियुक्त होता हुआ सम्यग्ज्ञान का अनुसरण करनेवाले मार्ग से विचरता है, तब वह विशुद्ध आत्मतत्त्व की उपलब्धिरूप मोक्षपुर को प्राप्त करता है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी इसप्रकार कहते हैं –

(दोहा)

सान्त–खीन करि मोह कौं, जिनसासन कौं जानि।
ज्ञानपंथ अनुगमन करि, सिवपुर करि पहिचानि।।३२५।।

(सवैया इकतीसा)

इहै जीव जाही समै जिनवानी–पन्थ जानै,
सान्त खीनमोही होइ मिथ्या हठ नासै है।
सत्यज्ञान–ज्योति जागै कर्त्ता सा भोगता लागै,
सरवग रूप एक प्रभुता विलासै है।।
ग्यान–पंथ सूधा एक ताहि मैं गमन करै,
भमनै का भाव झारै सुद्ध परकासै है।
केवल विमल एक सुद्ध सदकाल रहै,
सोई जगवास नासि मोखपास वासै है।।३२६।।

कवि हीरानन्दजी उक्त काव्यों में कहते हैं कि ''जिसने जिनशासन का रहस्य जानकर मोह का उपशमन एवं क्षय किया है तथा सम्यग्ज्ञान पन्थ का अनुगमन किया है, वह मोक्षमार्गी है, शिवपथ का पथिक है।

यह जीव जिससमय जिनशासन का मार्ग पा लेता है, वह मिथ्यात्व का नाशकर सम्यग्ज्ञानी होकर उपशांत मोही एवं क्षीणमोही हो जाता है। तथा सर्वज्ञता प्राप्त कर लेता है।

कवि आगे कहते हैं कि ज्ञान का मार्ग सीधा है, ज्ञानी उसी में गमन करता है। संसार में परिभ्रमण करने के भव का अभाव करता है, आत्मा के शुद्ध स्वरूप का प्रकाश करता है तथा जो मात्र निर्मल एक शुद्ध स्वरूप में सदाकाल रहता है वह जगवास का नाश करके मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

इसी तरह के भाव को व्यक्त करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं[१] कि ''जो अपनी फल विपाक दशारहित उपशम भाव को अथवा क्षयभाव को प्राप्त हुआ है तथा असत् वस्तु में प्रतीतरूप मोहकर्म जिसका नष्ट हो गया है, वह अपने स्वरूप में निश्चल सम्यग्दृष्टि जीव मोक्षनगर में गमन करता है।

जीव को जो उपशम या क्षायिक समकित होता है, वह अपनी प्रभुता से होता है, कर्मों के उपशम के कारण नहीं; यद्यपि कर्म के उपशम का समय और आत्मा में उपशम समकित होने का समय एक है, तथापि कर्म के उपशम के कारण समकित नहीं होता। जब जीव अपने शुद्धचिदानन्द स्वभाव के आश्रय से श्रद्धा करता है तब कर्मों का उपशम कर्मों के कारण होता है। कर्म आत्मा में कुछ करते नहीं हैं। तथा आत्मा कर्म में कुछ भी नहीं करता। दोनों में स्वतंत्र क्रिया होती है।

गुरुदेव कहते हैं कि प्रभुत्व शक्ति तो अनादि–अनन्त है। प्रभुत्व शक्ति दो नहीं हैं; परन्तु जिसको उस शक्ति का भान तो है नहीं है तथा राग–द्वेष के परिणाम करता है तो वे – 'परिणाम भी वह अपनी प्रभुत्व शक्ति से ही करता है; क्योंकि विकार करने में भी उसकी प्रभुता है और स्वभाव का भान होने पर शुद्धता प्रगट करने में भी स्वयं की प्रभुता है।''

इसप्रकार इस गाथा में पर्याय की प्रभुता की बात की है। तथा स्वतंत्र पर्याय का ज्ञान कराने के लिए प्रमाण ज्ञान कराया है तथा कहा है कि ह्न जो सम्यग्दृष्टि जीव गुणस्थान परपाटी के क्रम से जिनवचनों द्वारा मोक्षमार्ग को प्राप्त करके दर्शनमोह के उपशम, क्षय, क्षयोपशम को प्राप्त

१. श्री सद्गुरु प्रवचनप्रसाद नं. १६० पृष्ठ १२६० दिनांक ९–४–५२ पंचास्तिकाय गाथा ७०

करके सम्यग्ज्ञान प्रगट करता है वह शीघ्र मोक्ष प्राप्त कर लेता है। ●

गाथा– ७१–७२

विगत गाथा में कहा है कि जो जिनवचन से मोक्षमार्गी होकर उपशांत तथा क्षीणमोही हो गये हैं अर्थात् जिन्हें दर्शनमोह का उपशम, क्षय अथवा क्षयोपशम हुआ है तथा ज्ञान के अनुसरण करने वाले मार्ग में विचरते हैं, वे धीर पुरुष निर्वाण को प्राप्त करते हैं।

अब प्रस्तुत गाथाओं में कहते हैं कि चैतन्यलक्षण से तो आत्मा एक ही है; किन्तु विविध अपेक्षाओं से उसे दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ और दस भेदवाला भी आगम में कहा है।

मूलगाथा इसप्रकार है –

एक्को चेव महप्पा सो दुवियप्पो तिलक्खणो होदि।
चदुचंकमणो भणिदो पंचग्गगुणप्पधाणो य॥71॥
छक्कापक्कमजुत्तो उवउत्तो सत्तभंगसब्भावो।
अट्ठासओ णवट्ठो जीवो दसट्ठाणगो भणिदो॥72॥

(हरिगीत)

आतम कहा चैतन्य से इक, ज्ञान–दर्शन से द्विविध।
उत्पाद–व्यय–ध्रुव से त्रिविध, अर चेतना से भी त्रिविध॥71॥
चतुपंच षट् व सप्त आदिक भेद दसविध जो कहे।
वे सभी कर्मों की अपेक्षा जिय के भेद जिनवर ने कहे॥72॥

मूलतः तो वह महान आत्मा एक ही है; किन्तु भेद, लक्षण, गति आदि की अपेक्षा अनेक भेदवाला कहा गया है। जैसे – पाँच मुख्य गुणों से पाँच भेदवाला भी कहा है। इसीप्रकार अनुश्रेणी गमन अपेक्षा छह भेदवाला, सात भंगों की अपेक्षा सात भेदवाला, ज्ञानावरणादि आठ कर्मों अथवा सम्यक्त्वादि आठ गुणों के आश्रयरूप आठ भेदवाला, नौ अर्थरूप और दसस्थानगत भेदवाला कहा गया है।''

आचार्यश्री अमृतचन्द्र टीका में और अधिक स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि – वह महान आत्मा वस्तुतः तो (१) नित्य चैतन्य उपयोगी होने से **एक** ही हैं। (२) दूसरे, ज्ञान–दर्शन भेदों के कारण **दो** भेदवाला है। (३) कर्मफल चेतना, कर्मचेतना और ज्ञानचेतना के भेदों से अथवा उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य त्रिलक्षण भेदों की अपेक्षा **तीन** भेदवाला है। (४) चार गतियों में भ्रमण करता है, इसकारण **चतुर्विध भ्रमण** वाला है। (५) पारिणामिक, औदयिक, उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक – इन पाँच भावों की मुख्यता से पाँच मुख्यगुणों की प्रधानता वाला है। (६) चार दिशाओं एवं ऊपर–नीचे इसप्रकार छह दिशाओं में भवान्तर गमन होने के कारण छह अपक्रम सहित हैं। (७) सात भंगों द्वारा जिसका सद्भाव है ऐसा सात भंगपूर्वक सद्भाववान हैं। (८) आठ कर्मों अथवा सम्यक्त्व आदि के भेद से आठ प्रकार का तथा (९) नवपदार्थ रूप से वर्तता है, इसलिए नव अर्थरूप है। (१०) पृथ्वी, जल अग्नि वायु साधारण व प्रत्येक वनस्पति तथा द्वि, त्रि, चतु एवं पंचेन्द्रियरूप दस स्थानों में प्राप्त होने से दस स्थानगत हैं।

इसी भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

एक जीव दुय भेद है, त्रय लच्छिन गति चारि।
पंच अग्रगुन जास मैं, षट्काय क्रम धारि॥३२८॥
सपतभंग सद्भाव हैं, अष्टाश्रय नव भेद।
दस–थानक गति देखिए, जीव–दरव निरभेद॥ ३२९॥

(सवैया इकतीसा)

चेतनासरूप एक ग्यान द्रग उपयोग,
दोइ भेद ज्ञान आदि चेतना त्रिभेद है।
चारौं गतिरूप धरै पंच भाव भेद वरै,
विग्रह सक्रमैंरूप षोढ़ा गति भेद है॥
अस्ति नास्ति आदि लसै सात अंग–वानी भेद,
आठ करम पद्धति पदारथ निवेद है।
दस थान वरती है चेतन दरब एक,
जानै जिनवानीवाला वस्तु निरभेद है॥ ३३०॥

उक्त छन्दों में कवि हीरानन्द ने वस्तु के विविध दृष्टिकोणों या विविध पहलुओं को उजागर करते हुए दस बोल कहे हैं, जो इसप्रकार हैं –

(१) चेतनास्वरूप आत्मा एक (२) ज्ञान–दर्शन गुणों के भेदों से देखें तो आत्मा के दो गुण हैं। (३) ज्ञान चेतना, कर्म चेतना एवं कर्मफल चेतना ह्न ऐसे तीन भेद हैं। (४) चार गतियों की अपेक्षा से देखें तो जीव के चार प्रकार हैं, (५) पाँच भावों की अपेक्षा जीव के पाँच भेद हैं। (६) चार दिशाएँ एवं ऊपर–नीचे इस प्रकार से विग्रह गमन की अपेक्षा जीव के छह भेद हैं। (७) सात भंग की अपेक्षा सात भेद हैं, कर्मों एवं गुणों की अपेक्षा आठ प्रकार हैं तथा (९) नौ पदार्थों के भेद से जीव के नौ प्रकार हैं तथा (१०) दस स्थानगत भेद होते हुए भी उक्त दस स्थानवर्ती चेतन द्रव्य एक ही हैं। इसप्रकार मूल वस्तु निर्भेद है, उसमें कोई भेद नहीं है।

इन दो गाथाओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने साररूप में विशेष यही कहा है कि जीवों में समय–समय पर जो नवीन अवस्थायें होती हैं, वे सब जीव के ही विभाव स्वभाव हैं। जीवों को समय–समय पर जुदे–जुदे राग–द्वेष के भाव होते हैं। काम, क्रोध, मिथ्यात्व, समकित, केवलज्ञान, सिद्धदशा वगैरह का जो उत्पाद होता है, वह जीव की तत्समय की योग्यता से स्वयं के कारण ही होता है, किसी कर्मादि के कारण नहीं ह्न ऐसा भेदज्ञान कराया है। यद्यपि उत्पाद स्वतंत्र बताया है; पर द्रव्य मात्र उत्पाद जितना ही नहीं है; किन्तु परिपूर्ण है। इसप्रकार इन गाथाओं में द्रव्य तथा पर्याय को विभिन्न प्रकारों तथा विविध विकल्पों का ज्ञान कराया है। ●

एक गौरवशाली शुरुआत –

प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण योजना प्रारंभ

देश–विदेश में निर्मित होने वाले जिनमन्दिरों की प्रतिष्ठाविधि संपन्न कराने हेतु प्रतिष्ठाचार्यों की बढती हुई मांग की पूर्ति करने के उद्देश्य से तीर्थधाम मङ्गलायतन अलीगढ एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर ने प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण–प्रशिक्षण योजना का शीघ्र शुभारम्भ करने का निर्णय लिया है।

इस सम्पूर्ण योजना का निर्देशन लोकप्रिय प्रवचनकार तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल करेंगे। प्रतिष्ठाविधि का व्यवस्थित पाठ्यक्रम एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान करने का उत्तरदायित्व लोकप्रिय प्रतिष्ठाचार्य ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ.राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंङ्गलायतन को सौंपा गया है। सम्पूर्ण शिविर योजना का संयोजन पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री मंङ्गलायतन एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर करेंगे।

इस अभिनव योजना हेतु पाठ्यक्रम निर्माण एवं अन्य आवश्यक कार्यवाही प्रारंभ कर दी गयी है। विस्तृत कार्ययोजना तैयार होने पर शीघ्र प्रकाशित की जायेगी।

समाज के प्रतिष्ठाचार्यों, विद्वानों एवं प्रबुद्धवर्ग से इस सम्बन्ध में समुचित सुझावों एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। कृपया अपने सुझाव एवं मार्गदर्शन इस पते पर प्रेषित करें –

(1) डॉ. हुकमचंद भारिल्ल
निर्देशक, प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण–प्रशिक्षण योजना,
पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.)
(2) पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन
संयोजक, प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण–प्रशिक्षण योजना,
तीर्थधाम मङ्गलायतन, अलीगढ–आगरा मार्ग, सासनी,
जिला–महामाया – 204216 (उ.प्र.)

शिविर एवं विधान सानन्द संपन्न

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान आगम मंदिर में दिनांक 15 से 17 अक्टूबर तक श्री भक्तामर मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर का आयोजन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन दिल्ली के तत्त्वावधान में हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन विधान एवं गुरुदेवश्री के सी.डी प्रवचनों के उपरान्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' के भक्तामर स्तोत्र पर एवं वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा के मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल, डॉ.आर.के. जैन विदिशा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित पूरनचन्दजी, डॉ. विनोदजी शास्त्री, पण्डित केशरीमलजी, श्री बसंतजी बड़जात्या एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री दिल्ली का समागम प्राप्त हुआ।

विधान का आयोजन श्रीमती अल्कादेवी नरेन्द्रजी परिवार बाहूबली एन्क्लेव दिल्ली द्वारा किया गया। ध्वजारोहण श्री प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर के करकमलों से हुआ। मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्री अजितप्रसादजी एवं श्री आदीशजी जैन दिल्ली थे।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

मङ्गलायतन–अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनाँक 2 से 7 नवम्बर तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं श्री आदिनाथ–कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री अच्युतानन्दजी मिश्र ने की। मुख्य अतिथि श्री अभिनन्दनकुमारजी जैन सहारनपुर, उद्घाटनकर्त्ता श्री के.सी. झांझरी औरंगाबाद एवं ध्वजारोहणकर्त्ता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर थे।

इस अवसर पर प्रात: पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा प्रौढकक्षा के पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: मुख्य प्रवचनों में प्रारंभ के दो दिनों तक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित विमलचंदजी झांझरी व पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन के सारगर्भित प्रवचन हुये। दोपहर में व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित शांतिकुमारजी महिदपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत श्री पवनजी जैन अलीगढ, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर आदि के विविध विषयों पर स्वाध्याय का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

दिनांक 6 नवम्बर को धूम–धाम से निर्वाणोत्सव मनाया गया।

जयपुर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में शासन नायक 1008 भगवान महावीर स्वामी का 2537वाँ निर्वाण महोत्सव एवं गौतम स्वामी का केवलज्ञान महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रात: गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन से हुआ। तत्पश्चात् 7 से 8 बजे तक त्रिमूर्ति जिनालय एवं सीमंधर जिनालय में भगवान महावीर पूजन एवं निर्वाण–प्रतीक गोला समर्पित किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर का भगवान महावीर निर्वाणोत्सव संबंधी विशेष व्याख्यान हुआ। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर का केवलज्ञान के प्रसंग पर विशेष व्याख्यान हुआ।

जौहरी बाजार स्थित श्री तेरहपंथी बड़ा मंदिर (टोडरमलजी का मंदिर) में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के दीपावली एवं निर्वाणोत्सव विषय पर प्रासंगिक प्रवचन का लाभ मिला।

दीक्षान्त समारोह संपन्न

मङ्गलायतन अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ मङ्गलायतन विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षान्त समारोह दिनांक 2 नवम्बर को सानन्द संपन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति एवं हिन्दी के सुप्रतिष्ठित कवि डॉ. गोपालदास नीरज ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम मंचासीन थे। इस प्रसंग पर विश्वविद्यालय कोर्ट के सदस्य तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

समारोह में विश्वविद्यालय ने इन्फोसिस के संस्थापक श्री एन. आर.नारायणमूर्ति को डॉक्टर ऑफ साइंस (डी.एससी.) एवं विश्व प्रसिद्ध सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खाँ को डी.लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। साथ ही 732 छात्रों को डिग्रियाँ प्रदान की गई।

शाकाहार पर भव्य नाटक का मंचन

मुम्बई : यहाँ ग्रांट रोड़ स्थित भारतीय विद्या भवन में गैर सरकारी संस्था पाल (पीपल फॉर एनिमल लिबरेशन) ने दिनाँक 13 नवम्बर को अनिल मारवाड़ी निर्देशित नाटक संकल्प का मंचन किया।

नाटक में कलाकारों ने शाकाहार अपनाकर अनैतिक आचरण से दूर रहने का संदेश दिया। इसमें एक शाकाहारी योगी में ऐसी अद्भुत शक्ति होती है, जिससे उसके हाथ लगते ही व्यक्ति के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। उसकी इस शक्ति के कारण लोग दूर–दूर से स्वास्थ्य लाभ के लिये उसके पास आते हैं; लेकिन बुरे प्रभाव के कारण वह मांसाहार करना शुरु कर देता है। इससे उसकी कष्ट दूर करने की शक्ति नष्ट हो जाती है और उसमें कई दोष उत्पन्न हो जाते हैं।

नाटक में कलाकारों ने मांसाहार और अनैतिक आचरण से होने वाले अमानवीय अत्याचार को दर्शाया है। नाटक में दिल्ली, जयपुर, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि प्रांतों से आये हुये कुल 14 कलाकारों ने भाग लिया। इसमें सर्वज्ञ भारिल्ल, देवांग गाला, सुधर्म मुडल्गी, ज्ञायक समैया, अनुज जैन, आशीष महाजन, विवेक जैन, चेतन पवैया, अंकित जैन, आराध्य टडैया, प्रतीक शाह, नकुल जैन, नील हरिया, दर्शित जैन आदि कलाकारों ने अभिनय किया।

शाकाहार एवं जीव दया के उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही संस्था **पाल** के संस्थापक सर्वज्ञ भारिल्ल ने बताया कि नाटक के माध्यम से आजकल शाकाहार के प्रति चल रही भ्रान्तियों का निराकरण किया जाता है। शाकाहार में ताकत नहीं होती, अंडा शाकाहारी है – जैसे आधारहीन तथ्यों का ज्ञान कराते हुये शाकाहारी रहने और बनने की प्रेरणा दी जाती है।

पाल के मुम्बई प्रमुख देवांग गाला ने बताया कि भगवान महावीर और महात्मा गांधी के देश में अहिंसा और शाकाहार की सख्त आवश्यकता है। जानवरों को भी इस पृथ्वी पर रहने का उतना ही अधिकार है, जितना कि मनुष्यों का और उन्हें अधिकार दिलाने के लिये हमें आगे आना होगा।

अवैध मत्स्याखेट रोका

उदयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के कार्यकर्ताओं ने दिनाँक 27 अक्टूबर को प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री के नेतृत्व में फतहसागर झील में हो रहे अवैध मत्स्याखेट पर रोक लगायी।

इस अवसर पर फैडरेशन के जिला प्रभारी पण्डित खेमचंदजी जैन ने बताया कि फतहसागर में विगत कई दिनों से अवैध मत्स्याखेट किया जा रहा था, जिसकी सूचना फैडरेशन के कार्यकर्ताओं को मिली। तत्पश्चात् अवैध मत्स्याखेट करने वाले युवकों को फैडरेशन के कार्यकर्ताओं ने रोका। उन युवकों ने हाथजोड़कर मांफी मांगी। इन युवकों की शिकायत जिला कलेक्टर श्री हेमन्तजी गेरा को की गयी एवं उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की मांग की गयी।

फतहसागर में मत्स्याखेट रोकने में फैडरेशन के राज. प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी जैन, श्री कमलजी भोरावत, श्री हितेशजी गांधी, श्री नृपेन्द्रजी जैन, श्री पूनमचंदजी मेहता आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा भोपाल द्वारा –

अनेक गतिविधियां संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा वर्ष 2010 में अनेक गतिविधियां संपन्न की गयीं, जो निम्नानुसार है –

– दिनाँक 11 से 17 फरवरी तक कोहेफिजा में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न हुआ।

– दिगम्बर जैन महासमिति में श्री अरुणजी वर्धमान संरक्षक एवं श्री जितेन्द्रजी सोगानी प्रांतीय मंत्री बने।

– दिनाँक 14 फरवरी को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया। प्रमुख समाचार पत्रों – दैनिक राज एक्सप्रेस एवं दैनिक पत्रिका में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती का फुल पेज का रंगीन विज्ञापन छपवाया गया, जिसमें उनके जीवन परिचय, उपलब्धियाँ एवं विशेषताओं का उल्लेख किया गया।

– दिनाँक 27 मार्च को भगवान महावीर के उद्देश्यों को प्रमुख अखबार दैनिक पत्रिका में रंगीन फुल पेज पर छपवाकर महावीर जयंती समारोह में वितरित किया गया।

– देवलाली में प्रशिक्षण शिविर में फैडरेशन के 31वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर भोपाल शाखा को श्रेष्ठ शाखा के रूप में चुना गया एवं श्री अरुणजी वर्धमान व श्री जितेन्द्रजी सोगानी को प्रतीक चिह्न आदि से सम्मानित किया गया।

– सितम्बर माह में भोपाल व आसपास के अनेक जिनालयों की सामूहिक वन्दना की गई। इस सामूहिक वन्दना में श्री दि.जैन मंदिर कोहेफिजा, बैरागढ, जैन नगर, कुराना, भानपुर, श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनालय–राजहोम्स, पिपलानी, हबीबगंज, 1100 क्वार्टर, शाहपुरा, नेहरुनगर, जवाहरचौक, टी.टी.नगर, प्रोफेसर कॉलोनी, जहांगीराबाद आदि जिनालयों की वन्दना की गयी।

– दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर के सानिध्य में धर्मलाभ लिया।

– प्रोजेक्टर द्वारा बड़े पर्दे पर प्रथम वीडियो छहढाला फिल्म का लगातार 2 दिनों तक प्रदर्शन किया गया।

– अक्टूबर माह में टोडरमल स्मारक भवन में शिक्षण शिविर के अवसर पर फैडरेशन के राष्ट्रीय अधिवेशन में 15 सदस्यों ने भागीदारी सुनिश्चित की। **– जितेन्द्र सोगानी**

कार्यकारिणी पुनर्गठित

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का पुनर्गठन किया गया।

अध्यक्ष श्री नरेन्द्रजी जैन जनता, उपाध्यक्ष श्री अजितजी जैन गुढा,श्री रत्नेशजी जैन शिक्षक व श्री अजितजी जैन पारस प्रेस, महामंत्री श्री संजयजी जैन हल्ले, मंत्री श्री अनुरागजी जैन दिगौड़ा व श्री समकितजी पिपरा, कोषाध्यक्ष श्री रचितजी वैशाखिया, संगठन मंत्री श्री राजीवजी जैन बानपुर व श्री अंकुरजी जैन दलीपुर एवं प्रवक्ता श्री शैलेषजी जैन चुने गये।

– हर्षकुमार जैन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

64 सत्रहवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टियों की चर्चा को आरंभ करने के पूर्व ही पण्डितजी सावधान करते हुए कहते हैं –

''यहाँ ऐसा जान लेना कि व्यवहार धर्म की प्रवृत्ति से पुण्यबंध होता है, इसलिए पापप्रवृत्ति की अपेक्षा तो इसका निषेध है नहीं; परन्तु यहाँ जो जीव व्यवहारप्रवृत्ति ही से संतुष्ट होकर सच्चे मोक्षमार्ग में उद्यमी नहीं होते हैं, उन्हें मोक्षमार्ग में सन्मुख करने के लिए उस शुभरूप मिथ्याप्रवृत्ति का भी निषेधरूप निरूपण करते हैं।

यह जो कथन करते हैं, उसे सुनकर यदि शुभप्रवृत्ति छोड़ अशुभ में प्रवृत्ति करोगे, तब तो तुम्हारा बुरा होगा; और यदि यथार्थ श्रद्धान करके मोक्षमार्ग में प्रवर्तन करोगे तो तुम्हारा भला होगा।

जैसे – कोई रोगी निर्गुण औषधि का निषेध सुनकर औषधि साधन को छोड़कर कुपथ्य करे तो वह मरेगा, उसमें वैद्य का कुछ दोष नहीं है; उसीप्रकार कोई संसारी पुण्यरूप धर्म का निषेध सुनकर धर्मसाधन छोड़ विषय-कषायरूप प्रवर्तन करेगा तो वही नरकादि में दु:ख पायेगा। उपदेशदाता का तो दोष है नहीं।

उपदेश देनेवाले का अभिप्राय तो असत्य श्रद्धानादि छुड़ाकर मोक्षमार्ग में लगाने का जानना।

सो ऐसे अभिप्राय से यहाँ निरूपण करते हैं।[१]''

आजकल ऐसी प्रवृत्ति हो गई है कि लोग वैद्य या डॉक्टर को दिखाये बिना ही, बीमारी की जाँच कराये बिना ही; अपने मन से या चाहे जिस के कहने से दवाइयाँ खा लेते हैं, खाते रहते हैं; विशेषकर विटामिन और चूरन-चटनी खाने के लिए तो किसी से पूछने की आवश्यकता ही नहीं समझते।

ऐसे लोगों को ध्यान में रखकर वैद्य या डॉक्टर यह समझाते हैं कि ऐसा करने से कुछ लाभ तो होता नहीं है; अपितु हानि अवश्य हो सकती है। इसलिए बिना विवेक के अनाप-शनाप दवाइयाँ खाते रहना अच्छी बात नहीं है। इसीप्रकार यह भी समझाते हैं कि जब चाहे, जो चाहे खाते रहना भी स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है।

यह सुनकर यदि कोई दवाइयाँ खाना ही बन्द कर दे या भोजन करना ही बंद कर दे तो बीमार हुए बिना तो रहेगा ही नहीं, मर भी सकता है।

स्वस्थ जीवन के लिए वैद्य या डॉक्टर के बताये अनुसार संयमित खान-पान एवं समय-समय पर सीमित दवाइयाँ लेना ही श्रेयस्कर है।

ठीक इसीप्रकार आजकल ज्ञानीजनों के मार्गदर्शन और शास्त्राधार के बिना ही कुछ लोग धर्म के नाम पर बाह्य क्रियाकाण्ड में उलझ जाते हैं। शास्त्रों में भूमिकानुसार आचरण का विधान है; उसे जाने बिना ही असंतुलित आचरण कर स्वयं को धर्मात्मा समझने लगते हैं।

चरणानुयोग के शास्त्रों में स्पष्ट निर्देश है कि सम्यग्दर्शन के बिना व्रत नहीं होते, संयम नहीं होता, तप-त्याग भी नहीं होते; किन्तु सम्यग्दर्शन की तो कोई बात ही नहीं करता और व्रत लिये-दिये जाते हैं, संयम धारण किया जाता है, कराया जाता है।

कौन से गुणस्थान में कैसा आचरण होता है, किस प्रतिमा में कैसा आचरण होता है ? जिनागम में इस बात के स्पष्ट उल्लेख होने पर भी कोई भी व्यक्ति अपनी मनमर्जी के अनुसार कभी दश-दश उपवास कर बैठता है तो कभी दिन-रात के विवेक बिना चाहे जब, चाहे जो कुछ; भक्ष्य-अभक्ष्य खाता-पीता रहता है।

पूजा-पाठ के संदर्भ में भी यही स्थिति है। कभी-कभी तो महीनों तक मंदिर ही नहीं जाते, देवदर्शन भी नहीं करते; तो कभी आठ-आठ घंटे तक लगातार पूजन करते रहते हैं।

दानादि के संदर्भ में भी इसीप्रकार की अनियमितता देखी जाती है। न पात्र का विवेक रहता है और न वस्तु की उपयोगिता का ध्यान ही रखा जाता है। कभी कुछ नहीं तो कभी लाखों का दान दिया जाता है।

इस व्यवहाराभासी के व्रत-तप, भक्ति, पूजन-पाठ, तीर्थयात्रा और दानादि कार्य कैसे होते हैं; इनकी चर्चा पण्डित टोडरमलजी के उद्धरण में विस्तार से आ चुकी है; अत: उक्त संदर्भ में अधिक चर्चा करना अभीष्ट नहीं है।

यहाँ तो पण्डितजी इस बात के लिए सावधान कर रहे हैं कि यहाँ हम उक्त प्रवृत्तियों की निरर्थकता का खुलासा करेंगे; उसे सुनकर तू सावधान तो होना, पर इनसे पूर्णत: विरक्त मत हो जाना; क्योंकि **अशुभ से निवृत्ति के लिए शुभ में प्रवृत्ति करना तो ठीक ही है; किन्तु उसमें भी विवेक का होना आवश्यक है; क्योंकि वह वास्तविक धर्म नहीं है।**

वास्तविक धर्म तो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और आत्मध्यानरूप सम्यक्चारित्र है।

ध्यान रहे, हम यहाँ पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि का निषेध नहीं कर रहे हैं; हम तो यह सब विवेकपूर्वक करने के लिए कह रहे हैं, इन्हें धर्म मानने का निषेध कर रहे हैं; क्योंकि निश्चयधर्म तो वीतरागभावरूप है और ये परिणाम रागरूप हैं, शुभरागरूप हैं।

अब **कुल अपेक्षा धर्मधारक व्यवहाराभासी** जीवों की प्रवृत्ति की चर्चा करते हैं। उनके संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का प्रतिपादन इसप्रकार है –

''वहाँ कोई जीव तो कुलक्रम से ही जैनी हैं, जैनधर्म का स्वरूप जानते नहीं, परन्तु कुल में जैसी प्रवृत्ति चली आयी है, वैसे प्रवर्तते हैं।

वहाँ जिसप्रकार अन्यमती अपने कुलधर्म में प्रवर्तते हैं, उसीप्रकार यह प्रवर्तते हैं। यदि कुलक्रम ही से धर्म हो तो मुसलमान आदि सभी धर्मात्मा हो जायें। जैनधर्म की विशेषता क्या रही ?

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१३

वही कहा है –

लोयम्मि रायणीई णायं ण कुलकम्मि कइयावि।
किं पुण तिलोय पहुणो जिणंदधम्माहिगारम्मि।।७।।

– उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला

लोक में यह राजनीति है कि कदाचित् कुलक्रम से न्याय नहीं होता है। जिसका कुल चोर हो, उसे चोरी करते पकड़ ले तो उसका कुलक्रम जानकर छोड़ते नहीं हैं, दण्ड ही देते हैं। तो त्रिलोकप्रभु जिनेन्द्रदेव के धर्म के अधिकार में क्या कुलक्रमानुसार न्याय संभव है?

तथा यदि पिता दरिद्री हो और आप धनवान हो, तब वहाँ तो कुलक्रम का विचार करके आप दरिद्री रहता ही नहीं, तो धर्म में कुल का क्या प्रयोजन है ?

तथा पिता नरक में जाये और पुत्र मोक्ष जाता है, वहाँ कुलक्रम कैसे रहा ? यदि कुल पर दृष्टि हो तो पुत्र भी नरकगामी होना चाहिए।

इसलिए धर्म में कुलक्रम का कुछ भी प्रयोजन नहीं है।

शास्त्रों का अर्थ विचारकर यदि कालदोष से जिनधर्म में पापी पुरुषों द्वारा कुदेव-कुगुरु-कुधर्म सेवनादिरूप तथा विषय-कषाय पोषणादिरूप विपरीत प्रवृत्ति चलाई गई हो, तो उसका त्याग करके जिन आज्ञानुसार प्रवर्तन करना योग्य है।[१]''

धर्म तो एकदम व्यक्तिगत वस्तु है। उसे तो बुद्धिपूर्वक समझ-बूझकर धारण किया जाता है। जिनके कुल में सच्चे धर्म की प्रवृत्ति नहीं है; उन्हें तो अत्यन्त सावधानीपूर्वक सत्य धर्म की खोज करके ही धर्म धारण करना चाहिए; किन्तु **महाभाग्य से जिनके कुल में सहज सत्यधर्म की परम्परा है, उन्हें भी सत्यधर्म को, उसका स्वरूप भलीभाँति समझ-बूझकर पूरी तरह परीक्षा करके धारण करना चाहिए; अन्यथा उनका धर्म भी कुलधर्म बनकर ही रह जायेगा।**

यदि हम ऐसे कुल में पैदा हुए हैं कि जहाँ पहले से ही परम सत्यधर्म है, खान-पान भी पवित्र है, मांस-मदिरा का सेवन नहीं है, शुद्ध शाकाहारी जीवन है; तो हमारा ये महाभाग्य है।

यदि हम दुर्भाग्य से ऐसे कुल में पैदा हुए होते, जहाँ न तो शुद्ध सदाचारी जीवन है और न वीतरागी जिनधर्म है; तो हमें सत्य की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ होती।

आज हमारे पास महाभाग्य से सर्वप्रकार की अनुकूलता है। ऐसी स्थिति में भी यदि हमने असली वीतरागी तत्त्वज्ञान को नहीं समझा, उसे विवेकपूर्वक स्वीकार नहीं किया तो यह मनुष्यभव, उत्तमकुल, शुद्ध-सात्त्विक जीवन और वीतरागी तत्त्वज्ञान की सहज उपलब्धि – ये सभी धर्मानुकूल संयोग बिखरते देर न लगेगी और हम अनन्तकाल तक भटकने के लिए चार गति और चौरासी लाख योनियों में से न मालूम कहाँ चले जावेंगे।

अत: यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम धर्म के सच्चे स्वरूप को समझें, तदर्थ स्वाध्याय करें, स्वयं पढें, गुरुजनों से समझें, साधर्मी भाई-बहिनों से समझें, निरन्तर ज्ञानियों के सत्समागम से एक बार तो निज भगवान आत्मा का अनुभव अवश्य कर लें, कुलधर्म में ही उलझकर न रह जावें।

माँ-बाप और कुटुम्ब-परिवार से तो हमारा संबंध देह का ही संबंध है, कुल-गोत्र संबंधी-संबंध भी देह का ही है; आत्मा का नहीं। अत: यही उचित है कि देहिक संबंधों में हम कुल परम्परा का निर्वाह करें।

कुल-गोत्र से आत्मा का तो कोई संबंध है नहीं; अत: आत्मा के कल्याण के लिए कुल परम्परा को निभाने की आवश्यकता नहीं है; अपितु तत्संबंधी निर्णय सर्वज्ञ परमात्मा की वाणी के आधार पर लिखे आगम के अध्ययन, उक्त आगम के जानकार आत्मानुभवी गुरुओं के मार्गदर्शन एवं तर्क की कसौटी पर कसकर ही किया जाना चाहिए।

यदि हम ऐसा नहीं कर सके तो हमारे ये सभी संयोग निरर्थक हो जावेंगे। यह तो हम सब जानते ही हैं कि संयोगों का वियोग सुनिश्चित है; अत: ये सभी संयोग एक दिन बिखर जानेवाले हैं। यदि ये कायम भी रहे तो हम इन्हें छोड़कर चले जानेवाले हैं। जो भी हो, समय पर इनका वियोग सुनिश्चित है। अत: समय रहते चेत जाने में ही लाभ है।

निष्कर्ष के रूप में पण्डितजी आदेश देते हैं –

''इसलिए विवाहादि कुल संबंधी कार्यों में तो कुलक्रम का विचार करना, परन्तु धर्म संबंधी कार्य में कुल का विचार नहीं करना।

जैसा धर्ममार्ग सच्चा है, उसीप्रकार प्रवर्तन करना योग्य है।[१]''

विवाहादि कार्य तो भव बढानेवाले हैं और उनका प्रभाव तो एक भव तक ही सीमित है, कुछ अच्छा-बुरा भी होगा तो भी उसका प्रभाव एक भव पर ही पड़ेगा; किन्तु धर्म का संबंध तो अनंतकाल तक रहेगा।

धर्म तो भव का अभाव करनेवाला है। धर्म के संबंध में हुई चूक तो अनंत संसार का कारण हो सकती है। अत: समझदारी तो इसी में है कि **विवाहादि कार्य में भले ही हम समाज व परिवार के विरोध में खड़े न हों; पर सत्य धर्म के निर्णय में समाज व परिवार से प्रभावित होना समझदारी का काम नहीं है।**

आज की स्थिति में तो यह है कि विवाहादि कार्यों में न केवल कुल संबंधी, अपितु धर्मसंबंधी विचार भी अत्यन्त गौण हो गया है। **आज तो रूप-रंग, शिक्षा, आर्थिक स्थिति आदि ही मुख्य हो गये हैं तथा धर्म के संबंध में सभी लोग कुलक्रम से ही चिपके हुए हैं।**

''हमारे यहाँ तो ऐसा चलता है, हमारे बाप-दादा तो ऐसा ही करते आये हैं; अत: हम तो ऐसा ही करेंगे'' – धर्म के संबंध में ऐसा कहते लोग आपको कहीं भी मिल जावेंगे। उक्त संदर्भ में विचार करने की बात तो बहुत दूर, कोई बात करने को भी तैयार नहीं है।

इसप्रकार की वृत्तिवालों को पण्डितजी के उक्त मार्गदर्शन पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

इसप्रकार कुल अपेक्षा धर्मधारकों की चर्चा की गयी। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१४

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१५

17 नवम्बर 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

पटाखे न फोड़ने का संकल्प लिया

उदयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के आह्वान पर भगवान महावीरस्वामी का निर्वाण महोत्सव अहिंसा पर्व के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

फैडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री ने बताया कि तीन चरणों में आयोजित इस अहिंसा पर्व के अभियान में चित्रकला प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, हस्ताक्षर अभियान, संकल्प-पत्र, पोस्टर प्रदर्शन, नुक्कड़ नाटक, सी.डी. प्रदर्शन आदि माध्यमों से अलवर, बूंदी, कोटा, जयपुर, अजमेर, भरतपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, बारां, पाली, ब्यावर, प्रतापगढ आदि जिलों में लगभग 20153 बच्चों ने पटाखे नहीं फोड़े। इन सभी बच्चों को राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया जायेगा।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि पूरे राजस्थान में अकेले दीपावली के दिन डेढ अरब रुपये के पटाखे फोड़कर लोग रुपयों का दुरुपयोग करते हैं, इन्हीं रुपयों को गरीबों की सेवा में लगाया जाये तो कई घरों में दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी। पटाखे फोड़ना हिंसा का कारण है; अत: जीवों की रक्षा के लिये पटाखे नहीं फोड़ने चाहिये। कुछ लोग पटाखे फोड़ने को मनोरंजन मानते हैं। मनोरंजन में व्यक्ति हमेशा उस वस्तु के पास जाता है। यदि पटाखे फोड़ना मनोरंजन होता है तो आग लगाकर भागते क्यों हैं ? अत: सिद्ध होता है कि पटाखे फोड़ने से मनोरंजन नहीं भय होता है। पटाखे फोड़ने से जीवों का घात (हिंसा) होता है।

जयपुर महानगर में फटाका विरोधी अभियान के संयोजक श्री संजयजी शास्त्री ने कहा कि पटाखे फोड़ने से मूक बघिर पशु-पक्षी रातभर आकुलित रहते हैं। इससे त्वचा रोग, ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, पैसे की बर्बादी आदि होते हैं। यह प्रथम अवसर है कि विभिन्न समाज एवं संगठनों ने दीपावली पर पटाखों के दुष्परिणामों व हानियों को देखते हुये इस अभियान में सहयोग दिया।

फैडरेशन के उदयपुर जिला प्रभारी पण्डित खेमचंदजी शास्त्री ने बताया कि फतह उ.मा.विद्यालय के प्राध्यापक व फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ.महावीरप्रसादजी शास्त्री की प्रेरणा से पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने तथा जीवदया के लिये विद्यालय के 76 छात्रों ने दीपावली पर्व पर किसी भी प्रकार का पटाखा नहीं फोड़ने का संकल्प लिया था।

दिनाँक 31 अक्टूबर को तारक गुरु ग्रंथालय में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा प्रकाशित 'पटाखे - लाभ या हानि' विषयक रंगीन पोस्टर का विमोचन दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज के अध्यक्ष द्वारा किया गया, पोस्टर को देखकर व उससे प्रेरित होकर समस्त जैन समाज ने एकमत से दीपावली पर्व को प्रदूषण मुक्त व जीवदया के रूप में मनाया।

डॉ. भारिल्ल की नवीनतम कृति

नियमसार अनुशीलन भाग-2

छपकर तैयार है। मूल्य 20 रुपये मात्र

कोटा संभाग की तीर्थयात्रा संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ दिनाँक 17 से 24 अक्टूबर तक अ.भा.जैन युवा फैडरेशन कोटा संभाग द्वारा तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया।

तीर्थयात्रा में कोटा, बिजौलिया, अड़िंदा पार्श्वनाथ, केसरिया पार्श्वनाथ, भिलौडा, चिंतामणि पार्श्वनाथ, देरोल (देवपुरी-52 जिनालय), तारंगाजी, उमताजी, चैतन्यधाम, वस्त्रापुर-अहमदाबाद, भावनगर, घोघा, सोनगढ, पालीताना, गिरनारजी, राजकोट, उमराला आदि स्थानों को सम्मिलित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जयकुमारजी बांरा, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विशेषजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित आशीषजी शास्त्री चिनौवा, पण्डित सोमिलजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संदीपजी शास्त्री चैतन्यधाम आदि विद्वानों द्वारा प्रतिदिन दो प्रवचनों का लाभ मिला। तारंगाजी, चैतन्यधाम, सोनगढ एवं गिरनारजी में विधान का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित तपिशजी शास्त्री एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये।

2 बसों एवं 3 छोटी गाड़ियों के माध्यम से हुई इस यात्रा में लगभग 115 यात्रियों ने भाग लिया। बसों में स्पीकर द्वारा प्रवचन, भक्ति, प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

18 से 21 नवम्बर	दिल्ली	अष्टाह्निका महापर्व
4 व 5 दिसम्बर	भोपाल	शिलान्यास
17 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
24 से 1 जनवरी,2011	इन्दौर(मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी, 2011	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी, 2011	उदयपुर	पंचकल्याणक
29 जनवरी से 4 फरवरी	भिण्ड	पंचकल्याणक

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127